

सील छिमा जब ऊपजै, अलख दृष्टि तब होय,
 बिना सील पहुंचे नहीं, लाख कथै जो कोय ।
 सीलवंत सबसे बड़ा, सर्व रतन की खानि,
 तीन लोक की संपदा, रही सील में आनि ।
 जहां दया तहां धर्म है, जहां लोभ तहं पाप,
 जहां क्रोध तहां काल हैं, जहां छिमा तहं आप ।
 खोद खाद धरती सहै, काट कूट बन राय,
 कुटिल वचन साधू सहै, औरन सहा न जाय ।
 ऋतु बसंत जाचक भया, हरषि दिया द्रुम पात,
 ताते नव पल्लव भया, दिया दूर नहीं जात ।
 हाथ बड़ा हरि भजन कर, द्रव्य बड़ा कछु देय,
 अकल बड़ी उपकार कर, जीवन का फल येह ।
 देह धरे का गुण यही, देह देह कछु देहु,
 बहुरि न देही पाइये, अबकी देहु सो देहु ।
 मरि जाऊं माँगू नहीं, अपने तन के काज,
 परमारथ के कारने, मोही न आवे लाज ।
 धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कछु होय,
 माली सींचैं सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय ।
 कबिरा धीरज के धरै, हाथी मन भर खाय,
 टूक एक के कारने, श्वान घरै घर जाय ।
 ज्ञानी ध्यानी संजमी, दाता सूर अनेक,
 जपिया तपिया बहुत हैं, सीलवन्त कोई एक ।
 जे जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम,
 दोउ हाथ उलीचिये, यहि सज्जन का काम ।
 यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान,
 सीस दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।
 रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवाया खाय,
 हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय ।